बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार यूनिवर्सिटी मुजफ्फरपुर

Dept. Of History R.N. College, Hajipur,

BA Part -I HISTORY (SUB)

कुतुबुद्दीन ऐबक का मूल्यांकन

आरंभिक तुर्क शासक और दिल्ली सल्तनत का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक था यद्यपि वह छोटी अवधि के लिए मात्र 4 वर्ष तक ही शासक रहा। अल्प अवधि में उसने कई महत्वपूर्ण कार्य करने का प्रयास किया , वास्तव में भारत में तुर्की राज्य की नींव डालने का श्रेय कुतुबुद्दीन ऐबक को ही जाता है। मोहम्मद गोरी के गुलाम के रूप में अपना जीवन आरंभ कर अपनी योग्यता के बल पर धीरे-धीरे उन्नति करते हुए सुल्तान के पद तक पहुंच गया।

विभिन्न इतिहासकारों की दृष्टि से कुतुबुद्दीन ऐबक की उपलब्धिया-

एक शासक के रूप में कुतुबुद्दीन ऐबक की उपलब्धियों को सभी इतिहासकारों ने सराहा है।

हबीबुल्लाह के अनुसार उसमें तुर्कों की निर्मलता और फारसियों की परिष्कृत अभिरुचि और शालीनता थी।

अबुल फजल ने कुतुबुद्दीन ऐबक की प्रशंसा में लिखा है कि उसने महान

कार्य किया, 3-4 वर्ष की अल्प शासनकाल में उसने शांति और व्यवस्था स्थापित कि, उसकी सेना में तुर्क, गोरी, खुरासानी, खिलजी और हिंदुस्तानी सैनिक थे। उसने अपनी प्रजा पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया।

हसन निजामी ने लिखा है कि कुतुबुद्दीन ऐबक अपनी प्रजा को समान रुप से न्याय प्रदान करता था। वह अपने राज्य की शक्ति और समृद्धि के लिए प्रयत्नशील था।

इतिहासकार मिनहाज ने लिखा है की कुतुबुद्दीन ऐबक श्रेष्ठ भावनाओं से युक्त विशाल हृदयी बादशाह था। वह बहुत दानशील था। अपनी उदारता के कारण वह इतना दान करता था। समकालीन लेखकों ने उसे लाख बख्श (लाखों का दान देने वाला) और पील बख्श (हाथियों का दान देने वाला) की उपाधि प्रदान किया था।

फरिश्ता ने लिखा है कि किसी की दानशीलता की प्रशंसा करना होता था तो लोग उसे अपने युग का कुतुबुद्दीन ऐबक पुकारते थे। गोरी की मृत्यु 1206 ई. मे हुई थी। ऐबक उस समय दिल्ली में ही था और दिल्ली के मुस्लिम सामन्तो और लाहौर के सामन्तो ने भी उसका नेतृत्व स्वीकार कर लिया थाा। परंतु उसने सुल्तान पद की उपाधि धारण नहीं की उसने केवल मालिक और सिपहसालार की उपाधि धारण की।

कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा कठिनाइयों पर विजय

1). शासन संभालने के साथ ही कुतुबुद्दीन को सबसे ज्यादा खतरा गजनी के सूबेदार यल्दौज से था। महमूद गोरी की मौत के बाद उसने नासिरुद्दीन कुबाचा पर आक्रमण करके उसे जीतने का प्रयास किया। कुबाचा, कुतुबुद्दीन ऐबक का नेतृत्व स्वीकार कर चुका था इसलिए ऐबक ने यल्दौज पर आक्रमण कर दिया और उसे वहां से परास्त करके खदेड़ दिया। उसने आगे बढ़कर गजनी को भी जीत लिया परंतु कुछ समय बाद यल्दौज ने पुनः गजनी का क्षेत्र प्राप्त कर लिया। कुतुबुद्दीन की सक्रियता के कारण भारतीय क्षेत्र पर कुतुबुद्दीन ऐबक का आधिपत्य बरकरार रहा।

2). बंगाल का आधिपत्य दिल्ली सल्तनत के लिए महत्वपूर्ण था, 1206 ई. मे अलीमर्दान ने बंगाल कि सत्ता हथिया ली लेकिन उसके विरोधी खिलजी सरदारों ने उसे बंदी बना लिया और मुहम्मद शेरा को सिहांसन पर बैठा दिया। अलीमर्दान वहां से भाग निकला तथा कुतुबुद्दीन ऐबक के पास चला गया तथा उससे सहायता की याचना की। उसने कुतुबुद्दीन ऐबक की अधीनता स्वीकार करने का वचन दिया इस प्रकार अलीमर्दान ने फिर से सत्ता हासिल कर ली। इसके पश्चात कुतुबुद्दीन ऐबक का प्रभाव बंगाल में और बढ़ गया। लगभग 4 वर्ष शासन करने के बाद नवंबर,1210 मे लाहौर में चौगान(पोलों के समान एक खेल) खेलते समय वह अपने घोड़े से गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

साहित्य क्षेत्र में उपलब्धियां

कुतुबुद्दीन ऐबक साहित्य और कला का संरक्षक था। तत्कालीन विद्वान हसन निजामी और फक्र- ए-मुदब्बिर उसके संरक्षण में था। हसन

निजामी ने “ताजुल मासिर” और फक्र- ए-मुदब्बिर ने “अदाब-उल-हर्ब-व-शुजाआत” नामक ग्रंथ की रचना की थी।

स्थापत्य कला में उपलब्धियां

कुतुबुद्दीन ऐबक ने राजधानी के रूप में दिल्ली का विकास भी किया। उसने दिल्ली और अजमेर में दो मस्जिद बनवाई। दिल्ली में “कुवत-उल-इस्लाम” मस्जिद का निर्माण करवाया यह मस्जिद भारत में इस्लामी पद्धति पर निर्मित प्रथम मस्जिद मानी जाती है, जो पृथ्वीराज तृतीय के किले राय पिथौरागढ़ के स्थान पर निर्मित की गई है। कहा जाता है कि इस मस्जिद का निर्माण जैन मंदिरों के अवशेषों पर किया गया है। दूसरी मस्जिद ढाई दिन का झोपड़ा है। यह अजमेर में स्थित है। इसका निर्माण भी कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया था। इस स्थान पर अजमेर के चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला थी जहां आज भी हरिकेलि नाटक के कुछ अंश लिखे हुए हैं।
कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में 1199 ई. में सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की याद में कुतुब मीनार का निर्माण कार्य शुरू। करवाया था लेकिन अचानक मृत्यु के कारण इसे पूरा नहीं कर सका, जिसे लगभग 1231 ई. में इल्तुतमिश ने पूरा करवाया। कुतुब मीनार के निर्माण से उतरी भारत में एक नई स्थापत्य शैली का विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

वस्तुतः कुतुबुद्दीन ऐबक के पास समय का अभाव था। वह अपने जीवन में दिल्ली सल्तनत को पूर्ण स्थायित्व प्रदान नहीं कर सका। कुतुबुद्दीन ऐबक

की मृत्यु के बाद अगला शासक आरामशाह बना, किंतु वह कुतुबुद्दीन ऐबक की तरह योग्य नहीं था। कुतुबुद्दीन ऐबक के कई कार्य अधूरे रह गए। उसके पश्चात इल्तुतमिश को अधूरे कार्य की पूर्ति के लिए प्रयास करना पड़ा। कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रशासनिक क्षेत्र में जिस अब्बासी गजनबी और भारतीय परंपराओं का अनुपालन किया, उसका अनुपालन परवर्ती सल्तनत शासकों द्वारा भी किया गया। इस तरह वह एक ऐसे राज्य का संस्थापक बना जो भारत में लगभग तीन सौ वर्षों तक कायम रहा।

compiled and edited by different source
Dr.Amiya Anand, Assistant Professor
Dept. Of History R.N. College, Hajipur,